[Jain *, Vol.8 (Iss.3): March 2020] ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3733036

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

पूर्व ऐतिहासिक शैलचित्र : डिकेन (जिला नीमच)

डॉ. सुषमा जैन [1]

मुख्य शब्द – पूर्व ऐतिहासिक, शैलचित्र, डिकेन

Cite This Article: डॉ. सुषमा जैन. (2020). "पूर्व ऐतिहासिक शैलचित्र : डिकेन (जिला नीमच)." *International Journal of Research - Granthaalayah,* 8(3), 128-135. https://doi.org/10.5281/zenodo.3733036.

मानव प्रारम्भ से ही सौंदर्य एवं कला प्रेमी रहा है । मानव जीवन की भाँति कला के उदय का इतिहास अत्यंत रहस्यमय, विराट तथा अज्ञात है । काल की असंख्य परतों में विलीन अतीत के तथ्यों को मूर्त रूप में प्रस्तुत करना सहज नहीं है, आज भी हमारे पास साधनों एवं प्रमाणों का सर्वथा अभाव है।[1]

भारत में शैलचित्र जिन स्थानों पर प्राप्त हुए हैं वे स्थान आज भी मानव की पहुँच से दूर घने जंगलों में स्थित हैं।[2]

ये समस्त प्रागैतिहासिक कलाएँ मानव के सभ्य होने से पूर्व की हैं । इन शिलाचित्रों से हम न केवल आदिम मानव के स्वभाव, जीवन, संघर्ष तथा उसकी परिस्थितियों का ज्ञान प्राप्त करते हैं वरन् उसकी चेतना में व्याप्त सृजनशीलता से युक्त सौंदर्य बोध का भी प्रमाण पाते हैं । ये शैलचित्र अचानक ही प्रकाश में नहीं आ गए स्पेन, फ्रांस के प्रागैतिहासिक चित्रों के एक दशक पश्चात् भारत में भी शैलचित्र चर्चा का विषय बन गए । इन शैलाश्रयी चित्रों की खोज का श्रेय सर्वप्रथम कार्लाइल तथा काकबर्न को जाता है ।[3]

इन गुहाचित्रों के प्राप्त होने पर पुरातत्व वेत्ताओं एवं विद्वानों द्वारा अनेक सर्वेक्षणों के पश्चात् इन पर लेख लिखे गए तथा शोध पत्र पढ़े गए, जिसके द्वारा जन साधारण इस अमूल्य धरोहर से परिचित हुआ ।

भारतीय प्रागैतिहासिक चित्रों का अनुशीलन करने वाले विद्वानों में एलन हाटन, ब्रिड्रिक स्टूअर्ट पिगाट, डी.एच. गार्डन, प्रो. जुनेर लियोनार्ड अदम, श्री एफ.आर. अल्विन तथा श्रीमती अल्चिन, सी.ए. सेल्वेलाड, पंचनान मित्र तथा मनोरंजन घोष का नाम प्रमुख है । ब्रिड्रिक की पुस्तक 'दि हिस्टोरिक पेंटिंग' तथा पिगाट की पुस्तक 'प्री हिस्टॉरिक इंडिया' इस विषय के प्रमाणों तथा तथ्यों से परिपूर्ण है।[4] अब तक के प्रयत्नों से भारतीय शिलाचित्रों के प्रति संपूर्ण विश्व में रूचि जागृत हो चुकी थी । भारतीय विद्वानों ने भी इस विषय पर पुस्तकें लिखीं साथ ही भारतीय पुरातत्व विभाग के अधिकारियों द्वारा समय–समय पर उत्खनन कार्य किए गए तथा इंडियन आर्कियोलॉजी के माध्यम से रिपोर्ट एवं सूचनाएँ प्रकाशित की गईं । नवीन शोधकों में डॉ. वि.श्री. वाकणकर, गोवर्धनराय शर्मा, आर.वी. जोशी तथा एम.आर. खरे के नाम उल्लेखनीय हैं।[5] डॉ वि. श्री. वाकणकर ने भीमबेटका, भोपाल, ग्वालियर, मंदसौर, नरसिंहगढ़, धरमपुरी, खरवाई एवं भोपाल के आसपास के क्षेत्रों में अनेक चित्रित शैलाश्रय खोज निकाले थे, जिनसे मध्य भारत में प्रागैतिहासिक चित्रकला के इतिहास को संदर्भित करने हेतु महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई ।[6]

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3733036

मन्दसौर जिले के समीप नीमच के डिकेन नामक स्थान से आदि मानव द्वारा आकल्पित अनेक शिलाचित्र प्राप्त हुए हैं, जिन पर अभी तक कोई भी शोधकार्य नहीं किया गया है न ही इस पर शोधपत्र पढ़े गए हैं ।

मध्यप्रदेश के उत्तर पश्चिम में अरावली पर्वत श्रृंखला के समीप नवनिर्मित जिला नीमच बसा है, नीमच से 40 कि.मी. की दूरी पर डिकेन नामक स्थान जावद तहसील में सिंगोली मार्ग पर स्थित है । यहाँ पूर्वी एवं पश्चिमी किनारों पर स्थित नालों के दोनों ओर शैलाश्रयों की छतों एवं भित्तियों पर चित्रांकन किया गया है । अत्यंत दुर्गम स्थानों पर चित्रित इन शैलाश्रयों से सूर्य का प्रकाश भी आँख मिचौली करता प्रतीत होता है । मेरे द्वारा किए गए सर्वेक्षण के आधार पर डिकेन के शैलाश्रयों से प्राप्त चित्रों का वर्णन इस प्रकार है :–

आधार शिला शैलाश्रय – जावद तहसील के रामनगर सौंधली नामक स्थान से उत्तर की ओर नाले के दोनों तरफ आधारशिला नामक 24 शैलाश्रयों की श्रृंखला स्थित है, जिनमें से केवल 14 ही चित्रांकित हैं । यहाँ अंकित आखेट दृश्यों में बारहसिंगे का आखेट, मृग का आखेट तथा एक अस्पष्ट सा चित्र जंगली सूअर के आखेट का भी है, विश्राम मुद्रा में चित्रित जंगली भैंसा, विशाल आकार के वृषभ का रेखाचित्र अर्द्धपूरक शैली में बना है । यहाँ बिच्छु का एक चित्र अंकित हैं, जिसकी पतली–पतली टांगें स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो रही हैं ।

एक चित्र में बैलगाड़ी चित्रित है, इसके अतिरिक्त पंक्तिबद्ध मृग अनेक मानवाकृतियाँ तथा ज्यामितीय अलंकरण प्राप्त हुए हैं ।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3733036

करेल का भड़का खाल – नीमच सिंगोली मार्ग पर स्थित डिकेन से उत्तर पश्चिम दिशा की ओर लगभग 5 कि.मी. दूरी पर करेल का भड़का खाल नामक नाला है । नाले के दोनों ओर शैलाश्रय हैं । जिनका आकार लगभग 50 ग 10 फीट है। यहाँ केवल पाँच शैलाश्रयों में ही चित्र अंकित है ।इन शैलाश्रयों में काले एवं कत्थई रंग से चित्रण किया गया है यहाँ पर बने चित्रों में मानवाकृतियों के अतिरिक्त धार्मिक चिन्ह हाथ के छापे, स्वस्तिक एवं पुष्प आकृतियों का अंकन मिलता है । पशु चित्रण में वृषभ, हिरण तथा बारहसिंगे विभिन्न मुद्राओं में चित्रित हैं । यहाँ एक शिलापट्ट पर बना एक चित्र विभिन्नता लिए है इसकी शैली आलेखन के समान प्रतीत होती है ।

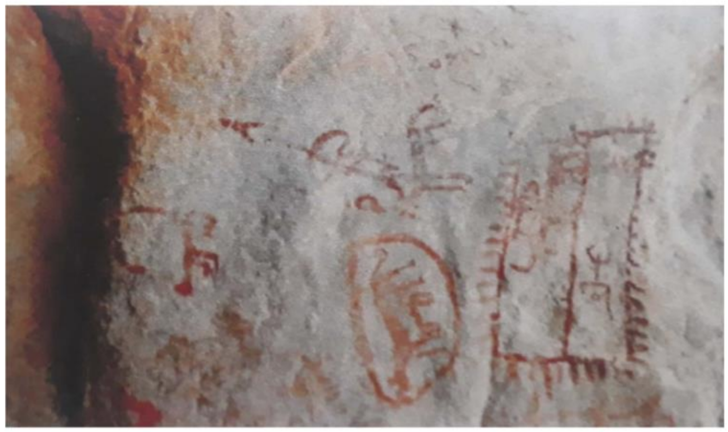

इसमें धनुष बाण थामे मानवकृति, एक बारहसिंगा, एक वृषभनुमा विचित्र पशु तथा पृष्ठभूमि में एक बन्दर अंकित है जिसकी पूंछ उसके आकार से भी लम्बी ऊपर की ओर गोल आकार में उठी हई बनाई गई है।

रानी छज्जा शैलाश्रय – यह शैलाश्रय डिकेन से लगभग 12 कि.मी. पूर्व की ओर गफाड़ा नामक ग्राम के पास स्थित पहाडी पर है। यहाँ के 11 शैलाश्रयों की श्रृंखला में अब केवल 5 में ही चित्र शेष हैं ।यहाँ चित्रांकन गेरूए लाल एवं कत्थई रंग में किया गया है । यहाँ एक आखेट चित्र में मानवों को महिषों का संहार करते चित्रित किया गया है ।

पूरक शैली में बने महिष जान बचा इधर–उधर भागने की मुद्रा में चित्रित हैं । बारहसिंगे, हिरण एवं मानवाकृतियों के साथ ही एक स्थान पर गजाकृति का भी अंकन किया गया है । इसके अतिरिक्त यहाँ हाथों के छापे,

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3733036

त्रिशूल, स्वस्तिक एवं अन्य ज्यामितीय आलेखनों के भी चित्र प्राप्त हुए हैं । यहाँ पर एक नृत्य समूह का चित्रण है, जिसमें आकृतियों को दोनों हाथ कटि पर रखे नृत्य करते हुए गतिमान मुद्रा में चित्रित किया गया है।

मच्छीखला शैलाश्रय – डिकेन से 8 कि.मी. पूर्व में नाले के दोनों ओर कुल 12 शैलाश्रय स्थित हैं जिनमें केवल 9 शैलाश्रयों में ही चित्र शेष हैं। शैलाश्रयों की भित्तियों पर मच्छी का प्रभावशाली अंकन होने के कारण इस क्षेत्र के शैलाश्रयों को मच्छीखला के नाम से जाना जाता है । यहाँ एक स्थान पर एक बैलगाड़ी के ऊपर एक मानवाकृति को चित्रित किया है । विस्मयकारी मुद्रा में हिरण तथा उसके सम्मुख आक्रामक मुद्रा में मानवाकृति का अंकन तथा एक अन्य स्थान पर भी हिरण का शिकार करते आखेटक का चित्रांकन है। भागते हुए महिष, जंगली सूअर, नीलगायों का समूह अकेला वृषभ तथा वृषभ के आखेट के दृश्यों को अत्यंत मार्मिकता से चित्रित किया गया है।

एक शिला पर जंगली भैंसे के आखेट का अत्यंत सजीव एवं भावपूर्ण दृश्य चित्रित है । मानवाकृतियों को सम्मुख वार करते देख मध्य में दो भैंसे भयभीत हो विपरीत दिशा में इधर–उधर भाग रहे हैं । इस शैलाश्रय में लाल रंग से बना एक नीलगाय का एक आकर्षक चित्र है जिसकी सीमा रेखाएँ गहरे रंग से अंकित करने के उपरान्त उसके पूरे शरीर में रंग भरा गया है। जो संभवतः असमतल पृष्ठभूमि होने के कारण और भी आकर्षक हो गया है चित्र के रंग इतने चमकदार है. अभी लगाए गए हो ।

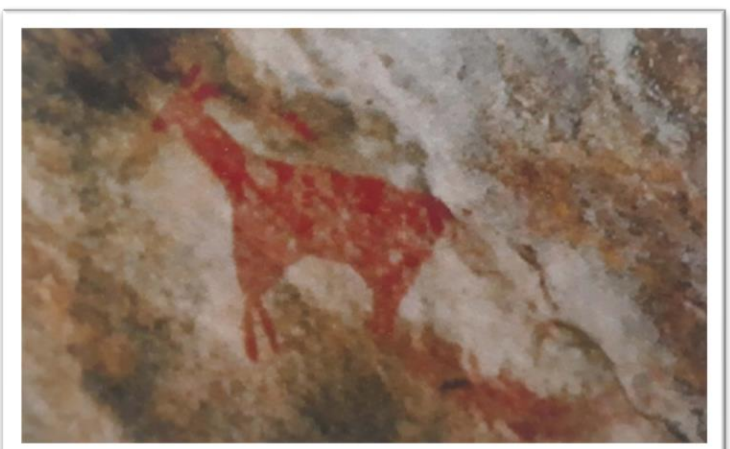

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3733036

एक शिला पर दो मानवाकृतियों व तीन वृषभों का चित्रण है। तीनों वृषभ मानवाकृति के आधीन होकर शान्त भाव से उसके साथ चल रहे हैं । सामने दोहरी रेखाओं से स्वस्तिक बना है, संपूर्ण चित्र गहरे लाल रंग से रेखाओं द्वारा ही आलेखित हैं

चांदवेरी शैलाश्रय – जावद तहसील के लॉपिया ग्राम से उत्तर पूर्व की ओर लगभग 5 कि.मी. की दूरी पर बारह चित्रित शैलाश्रयों की श्रृंखला है। चांदवेरी नाले के दोनों किनारों पर चट्टानों के कटावों से निर्मित इन शैलाश्रयों को चांदवेरी शैलाश्रय कहा जाता है।

इस शैलाश्रय में नीलगाय एवं सांभर के आखेट दृश्य जिसमें वृहदाकार चित्रित नीलगाय भूमि पर गिरी तथा उसके पैरों की ओर चित्रित मानवाकृतियाँ गतिशील एव आक्रामक मुद्रा में शिकार करने को उद्धत जान पड़ती हैं । एक चित्र के मध्य में स्वस्तिक चक्र तथा अन्य प्रतीक चिन्ह अंकित हैं जिसके चारों ओर नृत्यरत मानवाकृतियाँ चित्रित हैं । हिरणों के झुण्ड, सूअर, मृग तथा विभिन्न आयुधों से युक्त पंक्तिबद्ध मानवाकृतियों का चित्रण है।

यहीं एक असमतल भित्ति पर तीन मानवाकृतियाँ चित्रित है। जो अनुपात एवं संतुलन में आकर्षक रूप से संयोजित हैं । एक के हाथ में पताका के समान परशु हैं तथा दूसरी बाँया हाथ कमर पर टिकाए दायें हाथ में परशु धारण किए है जिसका शीर्ष भूस्पर्श कर रहा है । तीसरी आकृति विजयमुद्रा में हाथ में परशु के ही समान आयुध लिए दृष्टिगत हो रही है ।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3733036

मेण्डाकरी शैलाश्रय – जावद तहसील के ग्राम भगवानपुरा से उत्तर की ओर लगभग 6 कि.मी. की दूरी पर मेण्डाकरी नाला है, नाले के दोनों ओर शैलाश्रय स्थित हैं जिनमें लगभग 6 शैलाश्रय चित्रित हैं। यहाँ लगभग पाँच मानवाकृतियाँ नृत्य मुद्रा में चित्रित हैं, इनके हाथों व पैरों की मुद्रायें अलग–अलग हैं, जिससे गति का आभास होता है । इसके विपरीत सामने की शिला पर दो स्पष्ट तथा अन्य अस्पष्ट आकृतियाँ नृत्यलीन है ।

यहाँ एक सामूहिक नृत्य के चित्रण में वृषभ के आखेट पर विजय प्राप्त करने के बाद लगभग 19–20 मानवाकृतियाँ अर्द्धगोलाकार समूह में एक दूसरे से सटकर गति एवं लय के संतुलन में नृत्य कर रही हैं । बाँयी ओर बाणों से बिंधा वृषभ चित्रित है । इसी प्रकार एक हिरण के आखेट का भी भावपूर्ण दृश्य अंकित है ।

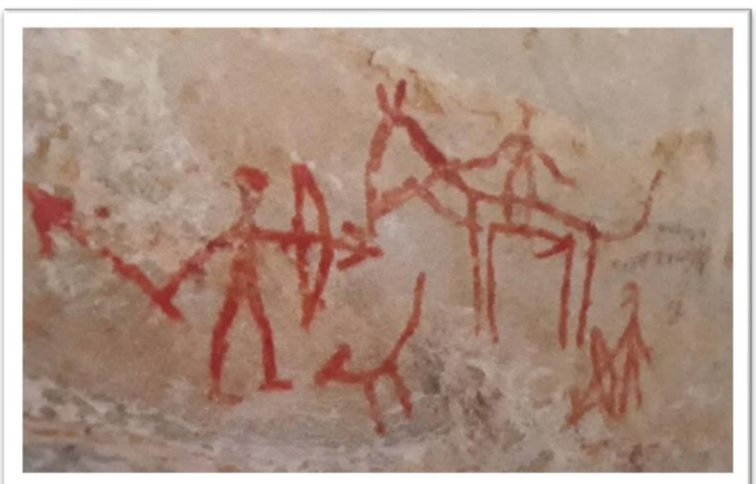

यह चित्र अत्यन्त प्रारंभिक शैली में चित्रित है। इस चित्र में बाँयी ओर एक मानवाकृति को हाथ में धनुष पर तीर चढ़ाए हुए बनाया गया है। इस आकृति के समक्ष हिरण को भयातुर मुद्रा में भागते हुए बनाया गया है। कुछ दूरी पर एक अन्य मानवाकृति को भी हाथ में धनुषबाण लिए बनाया गया है जो आकार में अत्यन्त छोटी है। मध्य में अश्व पर एक मानवाकृति आसीन है जिसने एक हाथ से घोड़े की लगाम पकड़ रखी है । एक शिला पट्ट पर एक स्वस्तिक चिन्ह तथा समीप ही एक चर्तुभुज में रेखाओं से एक आलेखन बनाया गया है तथा उसे बाहर की ओर कोनों पर तीन–तीन रेखाएँ खींच कर अलंकृत किया गया है।

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3733036

एक अन्य चित्र में एक स्वस्तिक तथा उसके समीप एक मनुष्याकृति का चित्रण है. दोनो श्वेत रंग से लगभग समान आकार में चित्रित हैं ।

एक रेखाचित्र में मॉडणे समान छः पंखुड़ियो वाला एक पद्म चित्रित किया गया है । जिसके समीप एक छोटा सा स्वस्तिक भी बना है।

एक ओर उल्लेखनीय चित्र, संभवतः किसी उत्सव प्रसंग का है । हाथों में गोल डफली समान वाद्य बजाती मानवाकृति तथा समीप ही पाँच–छः मानवाकृतियाँ उत्सव मना रही हैं । मृग, बारहसिंगे, जंगली महिष आदि पशु आकृतियों के साथ–साथ एक गेरूए रंग से बना एक मूषक का रेखाचित्र है जिसकी टांगें पशुओं के समान लम्बी अंकित की गई हैं।

एक स्थान पर वृषभ के आखेट को चित्रित किया गया है, यहाँ वृषभ को भयातुर मुद्रा में दिखाया गया है । सम्मुख आखेटक आखेट की मुद्रा में धनुष धारण किए है। आखेटक के पैर फैले हैं तथा उसका तीर वृषभ की गर्दन के नीचे लगा हुआ है । समस्त शिकार दृश्यों में भावाभिव्यक्ति अत्यंत सुन्दर रूप में अभिव्यंजित है ।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3733036

उपरोक्त शिलाचित्र तत्कालीन समय में ही प्रकाश में आए हैं । अतः इन पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुए हैं किन्तु चित्रों के विषय रचना प्रक्रिया तथा शैलीगत समानता के आधार पर चम्बल घाटी क्षेत्र के मोरी नामक स्थान में बने चित्रों के समकालीन रखा जा सकता है । डॉ. वि.श्री. वाकणकर ने इन्हें 8–10 हजार वर्ष प्राचीन माना है।

यहाँ मच्छीखला शैलाश्रय में एक गाय का चित्र है जिसके गर्भ में एक छोटे बछड़े का चित्रण किया गया है । चिब्बड़ नाला क्षेत्र में भी एक चित्र गर्भिणी गाय का है जो पशु समूह में सबसे आगे की ओर है । शिकारी पर आक्रमण करने की मुद्रा में अंकित है ।[7] सर्वप्रथम इस प्रकार के रेखाचित्र की खोज डॉ. वि.श्री. वाकणकर द्वारा की गई थी । चम्बल घाटी में सीताखर्डी नामक स्थान पर मोरी में एक गाय चित्रित है, गाय का चित्रण अधिक कलात्मक नहीं है किन्तु उसे गर्भवती चित्रित किया गया है, उसकी कोख में बछड़ा बनाया गया है ।[8]

हजारो वर्षों से प्राकृतिक प्रकोपों को सहन करते हुए शैलाश्रयी चित्र आदिम मानव द्वारा चित्रित दौड़ते, उछलते, गिरते और प्रहार करते आखेटकों, आक्रमण करते गतिशील पशुओं के चित्र हैं जिनमें प्रागैतिहासिक युग के मानव का संपूर्ण इतिहास संचित है ।[9]

चित्रों की रचना में प्रयुक्त गेरू, लौह दृव्य सफेदी, श्वेत रस वाली वनस्पति तथा कूची का उपयोग बाँस इत्यादि से किया जाता रहा होगा । ये चित्र सीधे शिलाओं पर बने हैं तथा उनके निर्माण से पूर्व किसी भी प्रकार के लेप का प्रयोग नहीं हुआ, रंगों का प्रयोग पारदर्शी तथा अपारदर्शी दोनो रूपों में किया । मुख्यत् पूरक, अर्द्धपूरक तथा रेखाचित्र शैली का प्रयोग प्राप्त है किन्तु कहीं–कहीं लोककला आलेखन की तरह भी चित्रांकन प्राप्त होता है।

शैलचित्रों के विकास क्रम में विद्वानों का मत है कि इनका उद्‌भव और अस्तित्व शताब्दियों पूर्व का है । लिपि इतिहास से भी यही सिद्ध होता है कि उसका विकास चित्र लिपि से हुआ और चित्र लिपि का चित्रण कला से । चित्रकला की सुदीर्घ परम्परा जो शिला चित्रों के परिप्रेक्ष्य में अधिक स्पष्ट होती है तथा इस तथ्य के साक्ष्य उपस्थित करती है कि चित्रकला ही समस्त लिपि विकास का मूल स्त्रोत है । स्पष्ट है कि जब आदिम कला प्रथम चरण में थी तब भी मानव अपनी मूक भावनाओं की मुखर अभिव्यक्ति करने में समर्थ था ।

संदर्भ

[1] वाचस्पति गैरोला – भारतीय चित्रकला, पृ.सं. – 71
[2] डॉ. गोपाल मधुकर चतुर्वेदी – भारतीय चित्रकला (ऐतिहासिक संदर्भ), पृ.सं. – 29
[3] डॉ. गोपाल मधुकर चतुर्वेदी – भारतीय चित्रकला (ऐतिहासिक संदर्भ), पृ.सं. – 28
[4] वाचस्पति गैरोला – भारतीय चित्रकला, पृ.सं.– 71
[5] डॉ. गिर्राज किशोर अग्रवाल – कला और कलम, पृ.सं. – 15
[6] पेन्टेड रॉक शैल्टर्स ऑफ इंडिया – ओरिएन्ट कान्फ्रेन्स अन्नामलाई प्रोसिडिंग –1955
[7] डॉ. पूर्णिमा मसीह – मध्यप्रदेश की प्रागैतिहासिक चित्रकला, पृ.सं. – 32
[8] डॉ. वि.श्री. वाकणकर – इंडियन आर्कियोलॉजी रिव्यू 1957–58, पृ.सं. – 27
[9] डॉ. अविनाश बहादुर वर्मा – भारतीय चित्रकला का इतिहास, पृ.सं. – 2